वितरण का सिद्धान्त एवं सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त

Dr. Amitendra Singh
Economics Department
Pt.DDUGovt. Girls PG College ,RJPM Lucknow
E mail-amitendra82@gmail.com.in

वितरण का सिद्धान्त एवं सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त

- वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त
- **सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की मान्यताएँ**
- **सीमान्त उत्पादकता का अर्थ**
- **साधन बाजार में फर्म का सन्तुलन**

  (I) पूर्ण प्रतियोगिता में साधन कीमत का निर्धारण
- सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की आलोचनाएँ
- वितरण का आधुनिक सिद्धान्त अथवा मांग एवं पूर्ति सिद्धांत

वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त

- वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त यह बताता है कि दी हुई मान्यताओं के अन्तर्गत दीर्घकाल में किसी साधन के पुरस्कार में उसकी सीमान्त उत्पादकता के बराबर होने की प्रवृत्ति पायी जाती है। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 19वीं शताब्दी के अन्त में जे0बी0क्लार्क, वालरस, विकस्टीड आदि अर्थशास्त्रियों द्वारा किया गया था। किन्तु इसे विस्तृत एवं सही नाम देने का श्रेय आधुनिक अर्थशास्त्रियों में श्रीमती जोन रॉबिन्सन तथा जे0आर0 हिक्स को है।
- "सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त यह बतलाता है कि एक साधन की कीमत उसकी उत्पादकता पर निर्भर होती है और वह सीमान्त उत्पादकता द्वारा निर्धारित होती है।"
- साधनों की कीमत उनकी उत्पादकता पर निर्भर-साधन की माँग 'व्युत्पन्न माँग' होती है अतः साधनों की माँग उनके द्वारा उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं की माँग पर निर्भर होती है। यदि वस्तु की माँग अधिक है तो साधन की माँग भी अधिक होगी क्योंकि अधिक मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए साधनों की माँग अधिक मात्रा में की जायेगी। इसके विपरीत, यदि उत्पादित वस्तु की माँग कम है तो वस्तु का कम मात्रा में उत्पादन करने के लिए साधन की माँगभी कम की जायेगी। साधनों की माँग उत्पादक के द्वारा इसलिए की जाती क्योंकि साधनों में वस्तुओं को उत्पादित करने की क्षमता होती है। दूसरे शब्दों में, साधनों की कीमत इसलिए दी जाती है क्योंकि उसमें उत्पादकता होती है ।

सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की मान्यताएँ

- पूर्ण प्रतियोगिता- यह मान लिया गया है कि बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता की दशा पायी जाती है। क्रेता और विक्रेता आपस में प्रतियोगिता के आधार पर साधनों का क्रय-विक्रय करते तो हैं, परन्तु वे आपस में एक-दूसरे को प्रभावित नहीं कर सकते हैं।
- साधनों का प्रतियोगी बाजार- उत्पत्ति के साधनों के द्वारा उत्पादित वस्तु का बाजार भी प्रतियोगी बाजार मान लिया जाता है।
- उत्पत्ति के साधनों में समानता-उत्पत्ति के साधन की विभिन्न इकाइयाँ एक-दूसरे की पूर्ण स्थानापत्र भी होती है।
- परिवर्तित साधन की कीमत की जानकारी-यह मान लिया गया है कि अन्य साधनों को स्थिर रखकर 'साधन विशेष' को परिवर्तित किया जाता है और परिवर्तित साधन की कीमत को ज्ञात कर लिया जाता है।
- लाभ का अधिकतम करना-प्रत्येक उत्पादक तथा फर्म का अन्तिम उद्देश्य यह होता है कि वह अपने लाभ में अधिकमत वृद्धि कर लेता है।
- उत्पत्ति ह्रास नियम की मान्यता-यह मान लिया गया है क उत्पादन में उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है।
- सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त-पूर्ण रोजगार की धारणा को मानकर कार्य करता है।

सीमान्त उत्पादकता का अर्थ

- **(क)सीमान्त भौतिक उत्पादन (Marginal Physical Product-MPP)**
- किसी साधन की एक अतिरिक्त इकाई के प्रयोग के कारण, अन्य साधनों की स्थिर मात्रा के साथ कुल उत्पादन में वृद्धि ही उस साधन का सीमान्त भौतिक उत्पादन है।
- इस प्रकार सीमान्त भौतिक उत्पादन = (साधन की एक अतिरिक्त इकाई के बाद कुल उत्पादन) - (साधन की उस अतिरिक्त इकाई के पहले का कुल उत्पादन)
- $MPP = TP_n – TP_{n-1}$ जिसमें TP कुल उत्पादन का प्रतीक है।
- **(ख)सीमान्त मूल्य उत्पादन (Marginal Value Product-MVP)**
- जब सीमान्त भौतिक उत्पादन को मूल्य या औसत आय से गुणा कर दिया जाय तो जो गुणनफल प्राप्त होगा उसे सीमान्त मूल्य उत्पादन कहेंगे। इस प्रकार
- सीमान्त मूल्य उत्पादन = सीमान्त भौतिक उत्पादन x मूल्य
- **MVP = MPP x Price (AR)**
- **(ग)सीमान्त आय उत्पादन (Marginal Revenue Product-MRP)**
- उत्पादन के किसी साधन की एक अतिरिक्त इकाई के फलस्वरूप ‘कुल मूल्य उत्पादन‘ अथवा कुल आय में होने वाली वृद्धि ही सीमान्त आय उत्पादन है। उदाहरण के लिए कोई फर्म 10 श्रमिकों को उत्पादन क्रिया में लगाती है तथा उनसे 100 कलम का उत्पादन प्राप्त करती है। यदि कलम का मूल्य प्रति कलम 5 रूपया हो तो फर्म की कुल आय या कुल मूल्य उत्पादन 100 x 5 = 500 रूपया होगा पर यदि फर्म एक और श्रमिक को उत्पादन-क्रिया में लगाये और यदि उसके बाद कुल उत्पादन 108 कलम का हो जाय तथा यदि हम यह मान लें कि अब भी वह फर्म कलम की प्रति इकाई की कीमत 5 ही रूपया लेती है तो 108 कलमों के बेचने से 108 x 5 = 540 रूपया कुल आय प्राप्त होगी। सीमान्त मूल्य उत्पादन 540-500=40 रूपया होगा। चूँकि अन्तिम इकाई से जो आय प्राप्त होगी वह सीमान्त आय होगी, इसलिए यह भी कहा जा सकता है कि सीमान्त आय उत्पादन उस उत्पादन के साधन के सीमान्त भौतिक उत्पादन तथा सीमान्त आय का गुणनफल है। अर्थात्
- **MRP=MPP x MR**
- ऊपर दिये गये उदाहरण में सीमान्त भौतिक उत्पादन 8 कलम का है तथा सीमान्त आय 5

साधन बाजार में फर्म का सन्तुलन
(I) पूर्ण प्रतियोगिता में साधन कीमत का निर्धारण

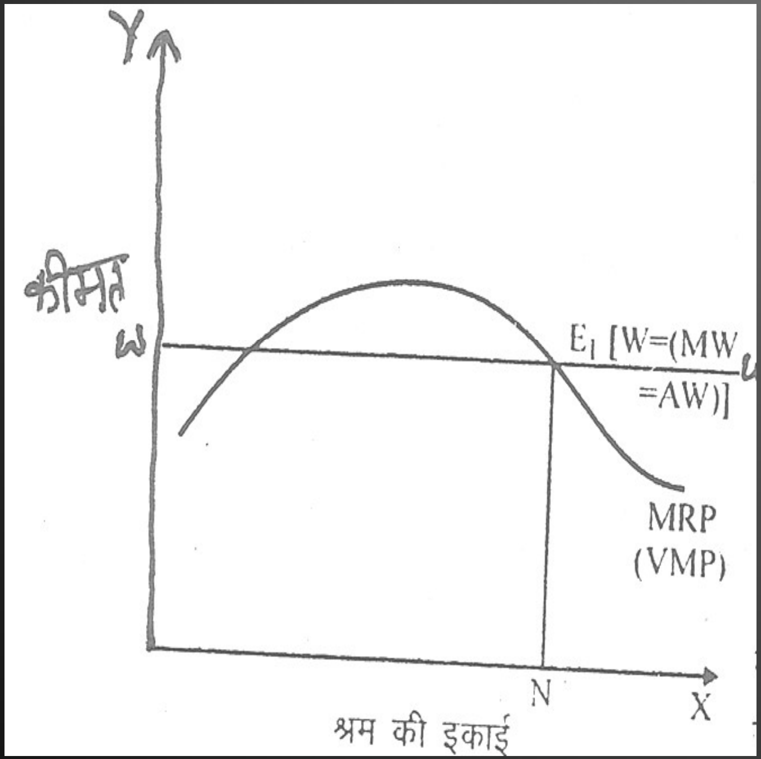

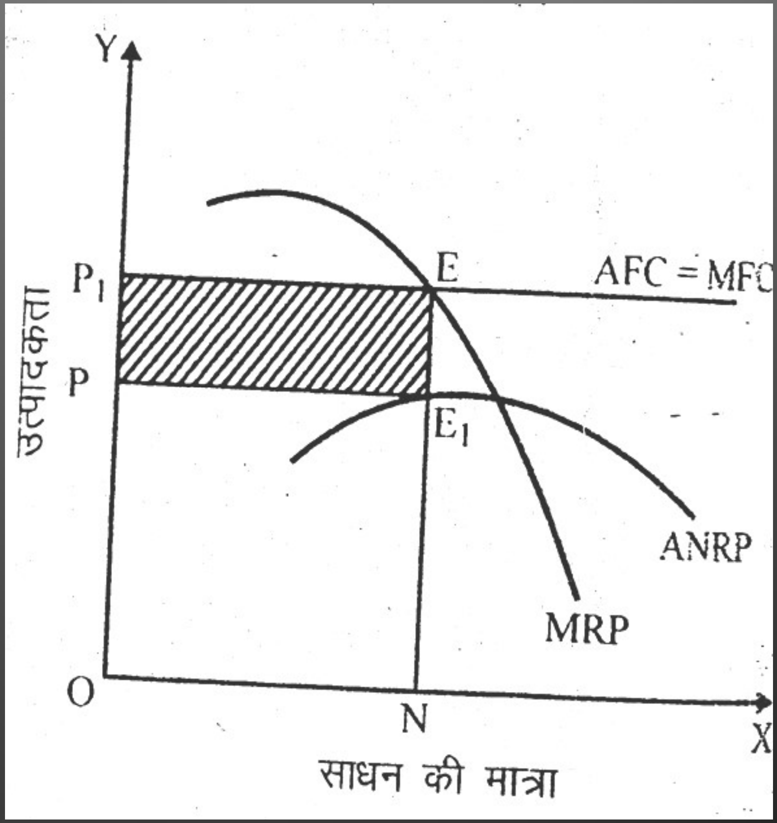

साधन बाजार में फर्म का सन्तुलन
(I) पूर्ण प्रतियोगिता में साधन कीमत का निर्धारण

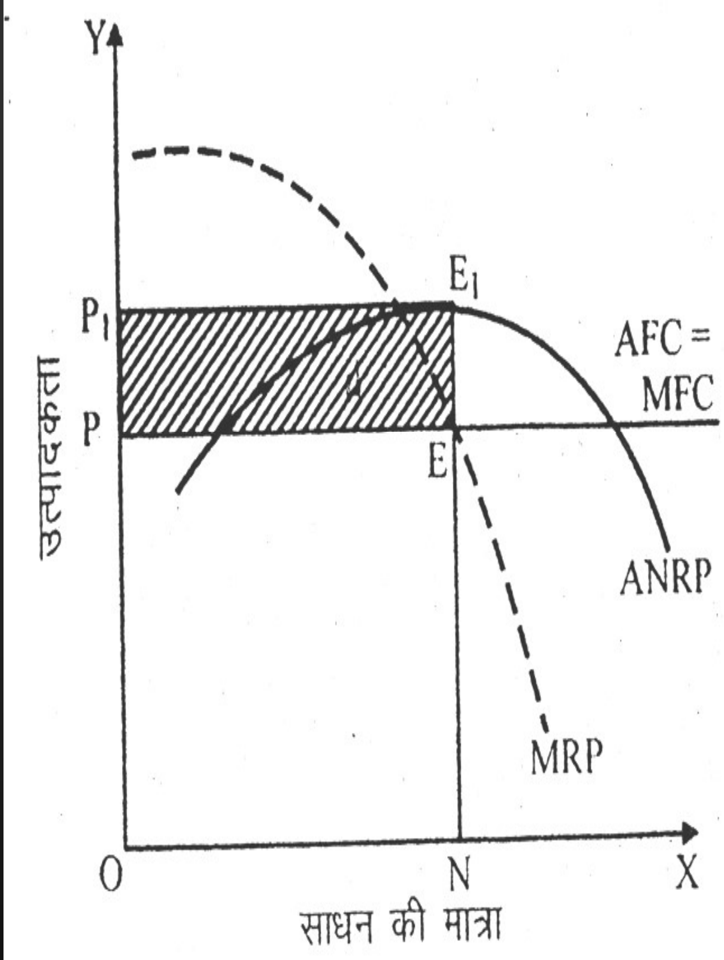

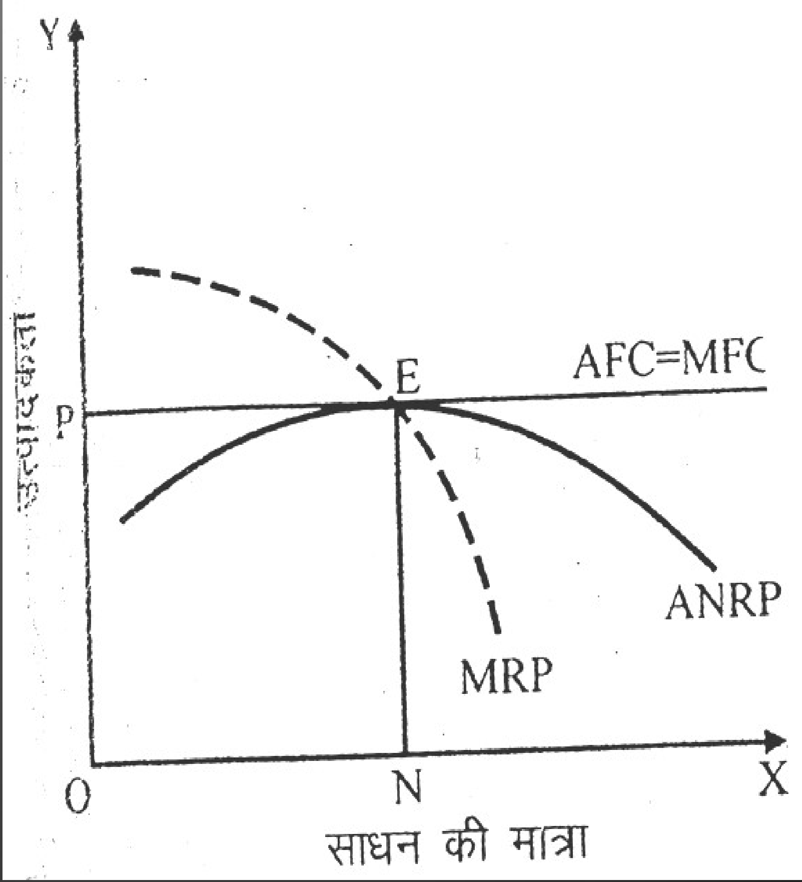

सिद्धान्त की आलोचनाएँ

- 1. इस सिद्धान्त के अनुसार उत्पादन-साधन की सभी इकाइयाँ सजातीय होती है जबकि वास्तविक व्यवहार में उत्पादन-साधन की इकाइयाँ विजातीय होती हैं।
- 2. इस सिद्धान्त के अनुसार विभिन्न उपयोगों के बीच उत्पादन-साधनों की गति शील ता पूर्ण होती है। जबकि यह मान्यता सही नहीं है। भूमि में तो गति शील ता का पूर्ण अभाव होता ही है, पूँजी व श्रम भी पूर्णतः गति शील नहीं होते। जिससे उनकी सीमान्त उत्पादकता समान नहीं हो सकती।
- 3. इस सिद्धान्त के अनुसार उत्पादन साधन पूर्णतया विभाज्य होते हैं। परिणामतः उनकी मात्राओं में अनन्त सूक्ष्म परिवर्तन किये जा सकते हैं। सत्य तो यह है कि एक निश्चित सीमा से आगे उत्पादन-साधन अविभाज्य हो जाते हैं।
- 4. इस सिद्धान्त के अनुसार उत्पादन-प्रक्रिया में साधन के अनुपातों को बदला जा सकता है। जबकि प्रावैधिक अन्य कारणों से सामान्यतया ऐसा सम्भव नहीं होता।
- 5. आलोचकों के अनुसार बड़े उद्योगों तथा कुछ विशेष परिस्थितियों में किसी एक साधन की सीमान्त उत्पादकता को मापना ही सम्भव नहीं होता।
- 6. कुछ आलोचक इसे वास्तविक नहीं मानते। क्योंकि सिद्धान्त सामान्यतः साधन के पारिश्रमिक को दिया हुआ तथा स्थिर मानता है।
- 7. इस सिद्धान्त के अनुसार किसी उत्पादन-साधन की सीमान्त उत्पादकता उसके पारिश्रमिक को प्रभावित करती है,
- 8. यह सिद्धान्त स्थिर अथवा आनुपातिक प्रतिफल नियम की मान्यता पर आधारित है। जबकि वास्तविक जीवन में वर्धमान अथवा ह्रासमान प्रतिफल नियम भी कार्यशील होता है।
- 9. यह सिद्धान्त साधन के कीमत-निर्धारण की केवल दीर्घकालीन व्याख्या ही हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।
- 10. यह सिद्धान्त पूर्ण प्रतियोगिता की गलत एवं अवास्तविक धारणा पर निर्मित किया गया है।
- 11. कुछ अर्थशास्त्रियों ने इस सिद्धान्त को इस आधार पर स्वीकार करने से इन्कार कर दिया है कि यह पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था के वर्तमान आय-वितरण को उचित बताता है जबकि इन अर्थशास्त्रियों के अनुसार यह वितरण अन्यायपूर्ण ही नहीं, बल्कि असमतायुक्त भी है।
- 12. कुछ अर्थशास्त्रियों ने इस सिद्धान्त की इस आधार पर आलोचना की है कि सीमान्त उत्पादकता आय-वितरण के लिए कोई वास्तविक आधार प्रस्तुत नहीं करती और न ही किसी उत्पादन-साधन के पारिश्रमिक तथा उसकी सीमान्त उत्पादकता के बीच कोई घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।
- 13. यह सिद्धान्त उत्पादन-साधन की पूर्ति को स्थिर मानकर चलता है। लेकिन वास्तविकता यह है कि भूमि को छोड़कर किसी भी साधन की पूर्ति स्थिर नहीं है, विशेषकर दीर्घकाल में तो किसी भी साधन की पूर्ति स्थिर नहीं होती।
- 14. यह सिद्धान्त केवल मांग पक्ष प[illegible]ने के कारण एकपक्षीय है।

वितरण का आधुनिक सिद्धान्त अथवा मांग एवं पूर्ति सिद्धांत

- वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत एकपक्षीय है क्योंकि यह केवल मांग -पक्ष पर ही बल देता है। वितरण का सही सिद्धांत मांग एवं पूर्ति का सिद्धांत है जिसमें वस्तु के मूल्य-निर्धारण की ही तरह मांग एवं पूर्ति की शक्तियों के क्रियाशील न के कारण उत्पादन के साधन का मूल्य अथवा पारितोषिक निर्धारित होता है।
- **19.4.1 मांग -पक्ष:** किसी वस्तु की मांग इसलिए होती है क्योंकि उससे उपभोक्ताओं के प्रत्यक्ष उपयोगिता मिल ती है। साधन की भी एक उपयोगिता होती है पर यह व्युत्पादित होती है। तात्पर्य यह है कि साधन की मांग उसकी सीमान्त उत्पादकता पर निर्भर करती है। कोई भी उत्पादक इससे अधिक पारिश्रमिक के रूप में किसी भी साधन को नहीं देगा। जिसकी व्याख्या सीमान्त उत्पाकदता के सम्बन्ध में की जा चुकी है।
- **19.4.2 पूर्ति-पक्ष:** पूर्ति-पक्ष अथवा लागत-पक्ष ... न्यूनतम ...

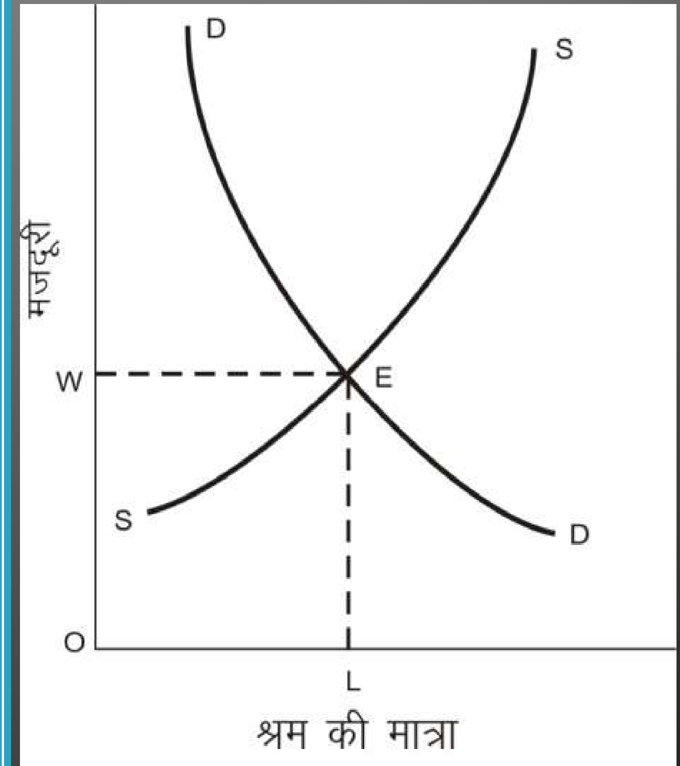

चित्र नं0 19:4

वितरण का आधुनिक सिद्धान्त अथवा मांग एवं पूर्ति सिद्धांत

- वितरण के मांग एवं पूर्ति सिद्धांत की व्याख्या विशेषरूप से मजदूरी के सन्दर्भ में की गयी है, पर यहाँ इतना स्पष्ट कर देना उचित होगा कि किसी साधन के मांग एवं पूर्ति के ऊपर बाजार की दशाओं का भी प्रभाव पड़ेगा। क्योंकि किसी साधन की मांग उस साधन की सीमान्त उत्पादकता या सीमान्त आय उत्पादन के ऊपर निर्भर करता है और सीमान्त आय उत्पादन के ऊपर उस बाजार की दशाओं का प्रभाव पड़ेगा जिसमें साधन द्वारा उत्पादित वस्तुयें बेची जायेंगी। इस प्रकार किसी साधन के मूल्य-निर्धारण के सम्बन्ध में, माँग एवं पूर्ति की इन विभिन्न दशाओं के आधार पर, निम्नांकित प्रकार की समस्यायें उत्पन्न होती है -
- 1. जब वस्तु बाजार तथा साधन-बाजार दोनों में पूर्ण प्रतियोगिता हो।
- 2. जब वस्तु बाजार तथा साधन-बाजार दोनों में अपूर्ण प्रतियोगिता हो।
- 3. जब वस्तु बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता तथा साधन-बाजार में अपूर्ण प्रतियोगिता हो।
- 4. जब वस्तु बाजार में अपूर्ण प्रतियोगिता तथा साधन-बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता हो।